بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 24
Issue - 01

राह-ए-ईमान

जनवरी
2022 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (तजल्लियात-ए-इलाहिया अर्थात ख़ुदा की चमकारें).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 14-01-2022).....8
7. क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर.....12
8. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना.....23
9. कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर.....24
10. सामान्य ज्ञान.....28

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

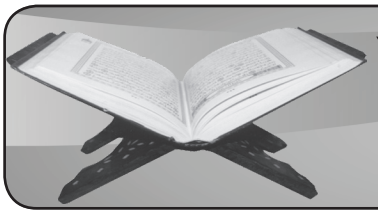

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ ؕ قُلْ فِيْهِمَاۤ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۫ وَ اِثْمُهُمَاۤ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ؕ وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَا ذَا يُنْفِقُوْنَ ۬ؕ قُلِ الْعَفْوَ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ۙ﴿۲۲۰﴾ (सूरह अल बक़र: आयत- 220)

अनुवाद:- वे तुझसे शराब और जुए के बारे सवाल करते हैं। तू कह दे कि इन दोनों में बड़ा गुनाह (भी) है और लोगों के लिए लाभ भी। और दोनों का गुनाह (का पहलू) उनके लाभ से बढ़कर है। और वे तुझसे (ये भी) पूछते हैं कि वे क्या ख़र्च करें? उनसे कह दे कि (आवश्यकताओं में से) जो भी बचता है। इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए (अपने) निशानात खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम विचार करो।

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद:-हज़रत अनस बिन मालिक वर्णन करते हैं कि अबू तलहा अंसारी अबू उबैदह बिन जराह और उबई इब्न काब को खजूर की शराब पिला रहा था। किसी आने वाले ने बताया कि शराब हराम हो गई है यह सुन कर अबू तलहा ने कहा अनस उठो और शराब के मटकों को तोड़ डालो। अनस कहते हैं कि मैं उठा और पत्थर की कूंडी का निचला हिस्सा मटकों पर दे मारा और वे टूट गए।

(बुख़ारी)

हज़रत अम्र बिन औफ वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मेरी सुन्नतों में से किसी सुन्नत को इस तरह जीवित करेगा कि लोग उस पर अमुकरण करने लगें तो सुन्नत जीवित करने वाले व्यक्ति को भी अमल करने वालों के बराबर सवाब मिलेगा और उनके इनाम में कोई कमी नहीं होगी और जिस व्यक्ति ने कोई बिदअत शुरु की और लोगों ने उसे अपना लिया तो उस व्यक्ति को भी उन पर अमल करने वालों के गुनाहों से हिस्सा मिलेगा और इन बिदअती लोगों के गुनाह में भी कुछ कमी न होगी। (इब्ने माजा)

☆ ☆ ☆

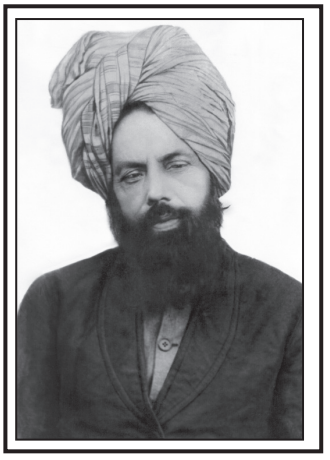

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

दुनिया के क़ैदख़ाना होने की वास्तविकता

फ़रमाया:- आगे आने वाली ज़िन्दगी में मोमिन के लिए पूर्णत: ज़ाहिरी तौर पर एक जन्नत है। लेकिन इस दुनिया में भी उसको एक अदृश्य तौर पर जन्नत मिलती है। जो यह कहा गया है कि दुनिया मोमिन के लिए "सिज्न" अर्थात् क़ैदख़ाना है। इसका यह अर्थ है कि शुरू में जब एक इन्सान अपने आप को शरीअत (क़ानून) की सीमाओं के अंदर डाल देता है और वह अच्छी तरह अभी उसके पालन का आदी नहीं होता तो वह समय उसके लिए कष्ट का होता है। क्योंकि वह उस समय अधर्म और अन्याय की आज़ादाना जिंदगी से निकल कर अपने आप को कामवासना के विरुद्ध ख़ुदा के क़ानून की क़ैद में डाल देता है। लेकिन धीरे-धीरे वह इससे ऐसे प्रेम और लगाव पकड़ता है कि वही हालत उसके लिए जन्नत हो जाती है। इसका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जो क़ैदख़ाना में किसी पर आशिक हो गया हो। अब क्या तुम सोच सकते हो कि वह क़ैदख़ाना से निकलना पसंद करेगा।

अपनी भाषा में दुआ

सवाल प्रस्तुत हुआ कि क्या नमाज़ में अपनी भाषा में दुआ मांगना जायज़ है? हज़रत अक़दस ने फ़रमाया :

"सब भाषाएं ख़ुदा ने बनाई हैं। चाहिए कि अपनी भाषा में जिस को अच्छी तरह समझ सकता है नमाज़ के अंदर दुआएं मांगे। क्योंकि इसका असर दिल पर पड़ता है ताकि विनम्रता और गिड़गिड़ाहट पैदा हो। कलामे इलाही को अरबी में ज़रूर पढ़ो और उसके अर्थ याद रखो और दुआ नि:संदेह अपनी भाषा में मांगो। जो लोग जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ते हैं और पीछे लंबी-लंबी दुआएं करते हैं वे वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं। दुआ का वक़्त नमाज़ है, नमाज़ में बहुत दुआएं मांगो।"

18 मई सन् 1901 ई.

फ़रमाया:- अगर हाकिम ज़ालिम है तो उसको बुरा न कहते फिरो। बल्कि अपनी हालत में सुधार करो। ख़ुदा उसको बदल देगा या उसी को नेक कर देगा जो तकलीफ़ आती है वह अपने ही दुराचारों के कारण से आती है। वर्ना मोमिन के साथ ख़ुदा का उपकार होता है। मोमिन के लिए ख़ुदा तआला ख़ुद सामान मुहैया कर देता है। मेरी नसीहत यही है कि हर तरह से तुम नेकी का नमूना बनो, ख़ुदा के अधिकारों का हनन न करो और बन्दों के अधिकारों का हनन न करो।" (मलफूज़ात जिल्द - 2)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

ख़ुदा तआला मुझे सम्बोधित करके फ़रमाता है कि तेरे लिए मैं पृथ्वी पर उतरा और तेरे लिए मेरा नाम चमका तथा मैंने तुझे समस्त संसार के लिए चुन लिया। और फ़रमाया है-

قال ربّك انّه نازلٌ من السماء مايرضيك

अर्थात् तेरा ख़ुदा कहता है कि आकाश से ऐसे चमत्कार उतरेंगे जिन से तू राज़ी हो जाएगा। अत: उनमें से इस देश में एक ताऊन और दो भयानक भूकम्प तो आ चुके जिन की मैंने ख़ुदा से इल्हाम पाकर पहले से खबर दी थी। परन्तु अब ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि पांच भूकमप और आएंगे और संसार उनकी असाधारण चमक को देखेगा और उन पर सिद्ध किया जाएगा कि ये ख़ुदा के निशान हैं जो उस के बन्दे मसीह मौऊद के लिए प्रकट हुए। अफ़सोस इस युग के नुजूमी और ज्योतिषी इन भविष्यवाणियों में मेरा ऐसा ही मुकाबला करते हैं जैसा कि जादूगरों ने मूसा नबी का मुकाबला किया था और कुछ नासमझ मुल्हम जो अंधकार के गढ़े में पड़े हुए हैं वे बलअम की तरह मेरे मुक़ाबले के लिए सच को छोड़ते और गुमराही को सहायता देते हैं परन्तु ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं सब को शर्मिन्दा करूंगा और किसी अन्य को यह प्रतिष्ठा कदापि नहीं दूंगा। इन सब के लिए अब समय है कि अपने नुजूम या इल्हाम से मेरा मुकाबला करें और यदि किसी आक्रमण को उठा रखें तो वे असफल हैं। ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं उन सब को पराजित करूंगा और मैं उस का शत्रु बन जाऊंगा जो तेरा शत्रु है और वह फ़रमाता है कि अपने रहस्यों की अभिव्यक्ति के लिए मैंने तुझे ही मनोनीत किया है तथा पृथ्वी और आकाश तेरे साथ है जैसा कि मेरे साथ है और तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरा अर्श। इसी के अनुसार पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है जो ख़ुदा के रसूलों को ग़ैरों से अलग करती है और वह यह है-

لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (अलजिन्न- 27,28)

अर्थात् खुला-खुला ग़ैब केवल मनोनीत रसूल को प्रदान किया जाता है ग़ैर (अन्य) को उसमें हिस्सा नहीं। इसलिए हमारी जमाअत को चाहिए कि ठोकर न खाएं और उन ग़ैरों को जो मेरे मुक़ाबले पर हैं तथा मेरी बैअत करने वालों में सम्मिलित नहीं हैं कुछ भी चीज़ न समझें अन्यथा ख़ुदा के प्रकोप के नीचे आएंगे। प्रत्येक अनर्थवादी जो भविष्यवाणी करता है ख़ुदा ऐसे लोगों से सच्चे ईमानदारों को आज़माता है कि क्या वे ग़ैर को वह महत्व और सम्मान देते है जो ख़ुदा और उसके रसूलों को देना चाहिए तथा देखता है कि क्या वे उस सच्चाई पर क़ायम हैं या नहीं जो उनको दी गई।

स्मरण रहे कि जब ये पांच भूकम्प आ चुकेंगे और ख़ुदा ने जितनी तबाही का इरादा किया है वह पूरा हो चुकेगा तब ख़ुदा की दया फिर जोश मारेगी और फिर असाधारण और भयावह भूकम्पों का एक

समय तक अन्त हो जाएगा और ताऊन भी देश में से जाती रहेगी जैसा कि ख़ुदा तआला ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया - يا تى عَلٰى جَهَنَّم زَما نٌ لَيْسَ فيها اَحَدٌ अर्थात् इस नर्क पर जो ताऊन और भूकम्पों का नर्क है एक दिन ऐसा समय आएगा कि इस नर्क में मनुष्य भी नहीं होगा। अर्थात् इस देश में और जैसा कि नूह के समय में हुआ कि एक बहुत सी सृष्टि की मौत के बाद अमन का युग प्रदान किया गया ऐसा ही यह भी होगा। और फिर इस इल्हाम के बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है -
ثُمَّ يُغَاثُ النَّاسُ و يعصرون अर्थात् फिर लोगों की दुआएं सुनी जाएंगी और समय पर वर्षाएं होंगी तथा बाग़ और खेत बहुत फल देंगे और खुशी का युग आ जाएगा तथा असाधारण आपदाएं दूर हो जाएंगी ताकि लोग यह न समझें कि ख़ुदा केवल महा प्रकोपी है, दयालु नहीं है और ताकि उसके मसीह को अशुभ न ठहराएं।★

स्मरण रहे कि मसीह मौऊद के समय में मौतों की प्रचुरता आवश्यक थी और भूकम्पों तथा ताऊन का आना एक निर्धारित बात थी। यही मायने उस हदीस के हैं कि जो लिखा है कि मसीह मौऊद की फूंक से लोग मरेंगे और जहां तक मसीह की नज़र जाएगी उसका क़त्ल करने वाली फूंक प्रभाव करेगी। तो यह नहीं समझना चाहिए कि उस हदीस में मसीह मौऊद को एक डाइन ठहराया गया है जो नज़र के साथ प्रत्येक का कलेजा निकाल लेगी अपितु हदीस के मायने यह हैं कि उसकी पवित्र सुगन्धों अर्थात् उसके कथन पृथ्वी पर जहां तक प्रकाशित होंगे तो चूंकि लोग उनका इन्कार करेंगे, और झुठलाएंगे तथा गालियां देंगे, इसलिए वह इन्कार अज़ाब का कारण हो जाएगा।[2]⁕ यह हदीस बता रही है कि मसीह मौऊद का कठोरता के साथ इन्कार होगा जिसके कारण देश में संक्रामक रोग होंगे और भयंकर भूकम्प आएंगे तथा अमन जाता रहेगा अन्यथा यह अनुचित बात है कि आकारण सदाचारी और नेक चलन लोगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाब की क़यामत आए। यही कारण है कि पहले युगों में भी मूर्ख लोगों ने प्रत्येक नबी को अशुभ समझा है और अपना कर्म-दण्ड उन पर थोप दिया है, परन्तु असल बात यह है कि नबी अज़ाब को नहीं लाता अपितु अज़ाब का पात्र हो जाना समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए नबी को लाता है और उसके स्थापित होने के लिए आवश्यकता पैदा करता है और कठोर अज़ाब नबी के स्थापित होने के बिना आता ही नहीं। **......शेष** (तजल्लियात-ए-इलाहिया (ख़ुदाई चमकारें) पृष्ठ 4-8)

★**हाशिया :-** मसीह मौऊद के लिए प्रारंभ से यही निर्धारित है कि पहले तो वह प्रकोपी रूप में प्रकट होगा और जहां तक उसकी नज़र काम करती है उस की फूंक से लोग मरेंगे अर्थात् वह युग जिहाद और तलवार से लड़ने का युग नहीं होगा केवल मसीह मौऊद का रूहानी ध्यान तलवार का काम दिखाएगा और आकाश से प्रकोपी निशान प्रकट होंगे। जैसे ताऊन और भूकम्प इत्यादि आपदाएं। तब इसके बाद ख़ुदा का मसीह मानव जाति को दया-दृष्टि से देखेगा और आकाश से दया के लक्षण प्रकट होंगे तथा उमरों में बरकत दी जाएगी पृथ्वी में से जीविका का सामान प्रचुर मात्रा में पैदा होगा। (इसी से)

⁕**हाशिया :-** इस हदीस से भी सिद्ध है कि मसीह के समय में जिहाद का आदेश निरस्त कर दिया जाएगा जैसा कि सही बुख़ारी में भी मसीह मौऊद कि विशेषताओं में लिखा है يضع الحرب अर्थात् मसीह मौऊद जब आएगा तो युद्ध और जिहाद को स्थगित कर देगा। इसमें हिकमत यह है कि जब मसीह के रूहानी ध्यान से प्रकोपी निशान प्रकट होंगे और लाखों लोग ताऊन और भूकम्पों इत्यादि से मरेंगे तो फिर तलवार के द्वारा किसी को क़त्ल करने की आवश्यकता नहीं रहेगी और ख़ुदा इस से अधिक दयावान है कि दो प्रकार के कठोर अज़ाब किसी क़ौम पर एक ही समय में उतारे। अर्थात् एक प्रकोपी निशानों का अज़ाब तथा दूसरा लोगों के द्वारा तलवार का अज़ाब। और ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर फ़रमा दिया है कि ये दो प्रकार के अज़ाब एक समय में इकट्ठे नहीं हो सकते। (इसी से)

सम्पादकीय

जलसा सालाना क़ादियान (वार्षिक सम्मेलन)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक समय में प्रथम जलसा सालाना वर्ष 1891 ई० में मस्जिद अक्सा क़ादियान में आयोजित हुआ था। उस समय से लेकर अब तक (पाँच वर्ष के अतिरिक्त) प्रत्येक वर्ष जलसा सालाना आयोजित होता रहा। अलहम्दोलिल्लाह अला ज़ालिक। जिन तीन वर्षों में जलसा सालाना आयोजित न हो सका उनका विवरण निम्नलिखित है :-

1) वर्ष 1893 ई० का जलसा सालाना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वयं स्थगित कर दिया था।

2) (वर्ष 1896 ई०) में दिनांक 26,27,28 और 29 दिसंबर के दिनों में पंजाब की राजधानी लाहौर में जलसा पेशवायाने मज़ाहिब आयोजित होना था और उस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम का लेख (इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी) पढ़ा जाना था। इस कारण जलसा सालाना क़ादियान स्थगित कर दिया गया था।

3) वर्ष 1902 ई० में हिंदुस्तान के विभिन्न क्षेत्रों में ताऊन की बीमारी भयानक रूप से फैलती जा रही थी और इस का फैलाव भी क़ुरआन मजीद और हदीसों की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सत्यापन के लिए था। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घोषणा की कि "क्योंकि आजकल ताऊन की बीमारी प्रत्येक स्थान पर बहुत ज़ोर पर है इसलिए यद्यपि क़ादियान में अन्य स्थानों की अपेक्षा आराम है परन्तु उचित ज्ञात होता है कि इस परिस्थिति में बड़ी भीड़ एकत्र होने से बचा जाए। (मजमुआ इश्तेहारात जिल्द 3 पृष्ठ-481)

4) दिसम्बर 2019 ई० भारत में NRC और CAA Bill को लेकर जगह जगह आंदोलन चल रहे थे। अत: देश हालात ठीक न होने के कारण हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा को इस वर्ष स्थगित कर दिया।

5) दिसम्बर 2020 ई० पूरी दुनिया में कोरोना महामारी का भयानक प्रकोप फैला हुआ था जिसके कारण इस वर्ष भी जलसा सालान को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला के आदेश पर स्थगित कर दिया गया।

जलसा सालाना के आयोजन का उद्देश्य

क़ुरआने मजीद और हदीसों तथा उम्मत के बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों से यह स्पष्ट होता था कि अल्लाह तआला ने यह वादा फ़रमाया कि वह चौदहवीं सदी हिजरी के आरंभ में इस्लाम और क़ुरआन की वास्तविकता सिद्ध करने के लिए और मानवजाति के सुधार के लिए एक व्यक्ति को मसीह मौऊद व महदी मौहूद और समस्त क़ौमों के लिए मौऊद बना कर भेजेगा। इस ख़ुदाई वादे से कुछ मुसलमान इस ग़लतफ़हमी में फंस गए थे कि वही ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे जो दो हज़ार वर्ष पहले बैतुल लह्म फ़िलस्तीन में पैदा हुए थे। उनकी ग़लतफ़हमी के अनुसार अल्लाह तआला ने उन्हें आसमान पर उठा लिया था और वही अपने पार्थिव शरीर के साथ पृथ्वी पर उतरेंगे। हालाँकि यह आस्था क़ुरआने मजीद और हदीसों के विरुद्ध है। वास्तविकता यह है कि हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम एक लाख चौबीस हज़ार नबियों के समान मृत्यु को प्राप्त हो गए थे और जो मर जाए वह कभी इस

संसार में वापिस नहीं आते। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया : اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (अलअंबिया-96) जिन्हें हमने मौत दे दी हो वे लोग लौट कर नहीं आएंगे।

क़ुरआने मजीद और इंजील में यह भी बताया गया था कि मसीह नासरी अलैहिस्सलाम का अवतरण केवल और केवल बनी इस्राईल (यहूद) के लिए था। वह कभी भी उम्मते मुहम्मदिया की ओर रसूल अथवा नबी बन कर नहीं आ सकते। सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस महदी और मसीह के प्रकटन के बारे में भविष्यवाणी की थी उसके बारे में यह सूचना भी दी थी कि हे मुसलमानो! (फीकुम व मिन्कुम) वह तुम्हीं में से एक व्यक्ति होगा। कोई गुज़रा हुआ नबी इस उम्मत में न आएगा। यह भविष्यवाणी चौदहवीं सदी हिजरी के आठवें वर्ष 1308 हिजरी (1891 ई०) में पूरी हुई और अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलातो वस्सलाम को संबोधित करते हुए फ़रमाया :

मसीह इब्ने मरियम रसूलुल्लाह फौत हो चुका है और उसके रंग में हो कर वादे के अनुसार तू आया है। वकाना वअदुल्लाहे मफ़ऊला (इज़ाला औहाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 3 पृष्ठ 402)

انا جعلناك المسيح ابن مريم (आईना कमालाते इस्लाम रूहानी खज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 550)

(अनुवाद) हम ने तुझे मसीह इब्ने मरियम बनाया है।

इस इल्हाम के बाद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने दुनिया को अपने दावे के बारे में बताया तो मौलवियों और मात्र नाम के उलेमा की ओर से विरोध चरम पर पहुंच गया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दिसंम्बर 1891 ई० में एक पत्रिका आसमानी फ़ैसला के नाम से लिखी। और इस में विरोधी मौलवियों, सूफ़ियों, पीरों, फ़क़ीरों और गद्दी नशीनों को संबोधित करते हुए फ़रमाया कि यदि विरोधी समझते हैं कि मुझे अल्लाह तआला ने मसीह और महदी बना कर नहीं भेजा और मुझे उसकी सहायता प्राप्त नहीं तो आप लोग क़ुरआन के सिद्धांत के अनुसार निम्नलिखित तीन बातों में मुझ से मुक़ाबला कर लें।

1- उमूरे गैबिया (अर्थात परोक्ष की बातों) का प्रदर्शन- अर्थात दोनों पक्षों में से किस को अल्लाह तआला अपनी परोक्ष की ख़बरों से सूचित करता है तथा उसकी भविष्यवाणी पूरी होती है।

2- दुआओं की स्वीकारिता- दोनों पक्षों में से किस की दुआएं अल्लाह तआला अधिक स्वीकार करता है।

3- क़ुरआन के रहस्यों का प्रकटन- दोनों पक्षों में से किस को अल्लाह तआला क़ुरआने मजीद के नए-नए ज्ञान तथा रहस्य तथा व्याख्याएँ सिखाता है। इसके लिए आप ने "आसमानी फ़ैसला" नामक पुस्तक लिखी।

फ़िर जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुस्तक "आसमानी फ़ैसला" लिख ली तो आप ने उचित समझा कि उसके प्रकाशन से पहले क़ादियान में एक जलसा आयोजित किया जाए और उसमें जमाअत के लोगों के समक्ष यह पुस्तक पढ़ कर सुनाई जाए। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के दोस्तों को यह हिदायत फ़रमाई कि 27 दिसंबर 1891 ई० को क़ादियान में आयोजित होने वाले जलसे में उपस्थित हों। अत: इस दिन मस्जिद अक्सा क़ादियान में लोग एकत्र हो गए। नमाज़ ज़ुहर के बाद जलसे की कारवाई आरंभ हुई और मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी रज़ि ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक "आसमानी फैसला" पढ़ कर सुनाई। तब से इस जलसा सालाना का लगभग प्रति वर्ष आयोजन होने लगा। **फरहत अहमद आचार्य**

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक-14.01.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- गत ख़ुत्बः से पिछले ख़ुत्बः में हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु का वर्णन हो रहा था। हिजरत की यात्रा के समय सुराक़ा बिन मालिक के पीछा करने के विषय में कुछ रिवायतें हैं। एक रिवायत के अनुसार सुराक़ा के वापस लौटते हुए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सुराक़ा! तेरा क्या हाल होगा जब किसरा बादशाह के कंगन तेरे हाथ में होंगे। सुराक़ा चकित होकर पलटा और कहा कि किसरा बिन हर्मज़? आप स. ने फ़रमाया- हाँ वही, किसरा बिन हर्मज़। अतएव जब हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफ़त के ज़माने में किसरा बादशाह के कंगन, ताज और कमर बन्द लाया गया तो हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने सुराक़ा को बुलाया और उन्हें ये कंगन पहनाए तथा फ़रमाया- कहो कि समस्त स्तुति अल्लाह के लिए है जिसने किसरा बिन हर्मज़ से ये दोनों छीन कर हमें दिए हैं। यह वर्णन भी मिलता है कि सुराक़ा को यह शुभ सूचना हुनैन तथा ताएफ़ नामक स्थानों से वापसी की यात्रा के समय उनके इस्लाम क़बूल करने पर दी गई थी।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में सुराक़ा के अपने शब्दों में यह घटना उल्लिखित फ़रमाई है। फ़ाल (भविष्य फल) अनुचित निकलने तथा घोड़े के पाँव रेत में धंसने के सम्बंध में सुराक़ा का बयान है कि इस कार्यवाही से मैंने यह समझा कि इस व्यक्ति का सितारा बुलन्दी पर है तथा अन्ततः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही विजयी रहेंगे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब सुराक़ा लौटने लगा तो तुरन्त अल्लाह तआला ने भविष्य की स्थिति आप स. पर परोक्ष से प्रकट कर दी। आप स. ने फ़रमाया- उस समय तेरा क्या हाल होगा

जब तेरे हाथों में किसरा के कंगन होंगे। आप स. की यह पेशगोई सोलह सतरह साल के बाद जाकर शब्दश: पूरी हुई। सुराक़ा मुसलमान होने के बाद अपनी इस घटना को मुसलमानों के सामने बड़े गर्व से सुनाया करता था और मुसलमान इस बात से अवगत थे। ईरान पर विजय के बाद युद्ध में हाथ आई सम्पदा में हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने किसरा के कंगन देखे तो पूरा नकशा आप रज़ी. की आँखों के सामने फिर गया। वह दुर्बलता तथा विवशता का समय जब ख़ुदा के रसूल को अपनी बस्ती छोड़ कर मदीना आना पड़ा, वह सुराक़ा तथा अन्य लोगों का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे इस लिए घोड़े दौड़ाना कि किसी अवस्था में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ कर मक्का वालों तक पहुंचा दें और सौ ऊँटनियों के मालिक बन जाएँ, उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुराक़ा को यह शुभ सूचना देना, कितनी महान पेशगोई थी, कितनी स्पष्ट भविष्यवाणी थी। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने सुराक़ा को आदेश दिया कि वह किसरा के कंगन अपने हाथों में पहनें। सुराक़ा ने कहा कि सोना पहनना तो मुसलमानों के लिए वर्जित है। हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हाँ, मना है किन्तु ऐसे अवसरों पर नहीं। अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तुम्हारे हाथों में सोने के कंगन दिखाए गए थे, या तो तुम ये कंगन पहनोगे या मैं तुम्हें दंड दूँगा। सुराक़ा ने वे कंगन अपने हाथों में पहन लिए तथा मुसलमानों ने उस महान भविष्यवाणी को पूरा होते हुए अपनी आँखों से देखा।

हिजरत की यात्रा के समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का काफ़ला यात्रा में आवश्यक सामग्री के की खोज में उम्मे मअबद के खेमे के पास रुका। उम्मे मअबद एक बहादुर महिला थीं जो यात्रियों को खाना खिलाया करती थीं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ाफ़ला वहाँ पहुंचा तो उम्मे मअबद की जाति अकाल से पीड़ित थी तथा उनके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश करने के लिए कुछ न था। उम्मे मअबद की आज्ञा से एक अत्यंत कमज़ोर तथा दुर्बल बकरी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरकत की दुआ करके उस बकरी का दूध निकाला तो अत्यधिक बरकत पड़ी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी रास्ते में थे कि उन्हें हज़रत ज़ुबैर रज़ीयल्लाहु अन्हु मिले जो मुसलमानों के एक क़ाफ़ले के साथ शाम देश से व्यापार करके वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर रज़ी. ने सफ़ेद कपड़ों का एक जोड़ा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तथा एक हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु की सेवा में भेंट किया।

चूँकि हज़रत अबू बकर रज़ि एक व्यापारी होने के कारण इस रास्ते से बार बार आते जाते रहते थे इस लिए अधिकांशत: लोग उनको पहचानते थे किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं पहचानते थे, अत: वे अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु से पूछते थे कि ये तुम्हारे साथ आगे आगे कौन है। हज़रत अबू बकर रज़ी. फ़रमाते- "हाज़ा यहदीनी अस्सबील" यह मेरा हादी (मार्ग-दर्शक) है। वे समझते थे कि शायद यह कोई दलील अर्थात गाइड है जो रास्ता दिखाने के लिए हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने साथ ले लिया है। परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. का अभिप्राय: कुछ और होता था।

आठ दिन यात्रा करते हुए ख़ुदाई सहायताओं के साथ अंतत: सोमवार के दिन आप स. क़ुबा नामक

स्थान पर पहुंच गए। यह मदीना से दो मील की दूरी पर था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि एक यहूदी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनियों को आते देखा तो समझ गया कि यह क़ाफ़ला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है। उसने बस्ती वालों को आवाज़ दी तो मदीने का हर एक व्यक्ति क़ुबा की ओर दौड़ पड़ा। मदीना के अधिकांश लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से परिचित नहीं थे। जब क़ुबा से बाहर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक पेड़ के नीचे बैठे हुए थे और लोग भागते हुए मदीना से आप स. की ओर आ रहे थे तो चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अत्यंत सादगी से बैठे हुए थे, उनमें से जो लोग आप स. को नहीं पहचानते थे हज़रत अबू बकर रज़ी. को देख कर जो यद्यपि आयु में कम थे किन्तु उनकी दाढ़ी में सफ़ेद बाल आ गए थे तथा इसी प्रकार उनका लिबास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ अच्छा भी था, यही समझते थे कि अबू बकर रज़ी. ही रसूलुल्लाह स. हैं तथा बड़े आदर पूर्वक आप रज़ी. की ओर मुंह करके बैठ जाते थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जब यह बात देखी तो समझ लिया कि लोगों को गलती लग रही है। वे तुरन्त चादर फैला कर सूरज के सामने खड़े हो गए और कहा या रसूलुल्लाह! आप पर धूप पड़ रही है, मैं आप पर छाया कर देता हूँ तथा इस सूक्ष्म युक्ति से उन्होंने लोगों पर उनकी चूक को स्पष्ट कर दिया।

हज़रत अनस बिन मालिक कहते हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पधारे तो हमारे लिए मदीना रौशन हो गया और जब आप स. का निधन हुआ तो उस दिन से अधिक अंधकार हमें मदीना नगर में कभी नहीं लगा। क़ुबा के अन्सार ने आपका अत्यंत हार्दिक अभिनन्दन किया और आप स. ने कुलसूम बिन अलहदम के मकान पर विश्राम किया।

सही बुख़ारी में रिवायत है कि आप स. बनू उमरू बिन औफ़ के मुहल्ले में दस से अधिक रात तक ठहरे। रिवायत में वर्णन है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू उमरू बिन औफ़ के लिए मस्जिद की आधार शिला रखी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी बुनियाद रखी तो सबसे पहले आप स. ने क़िबले की ओर एक पत्थर रखा फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक पत्थर लाकर रखा फिर हज़रत उमर रज़ी. एक पत्थर ले आए और हज़रत अबू बकर रज़ी. के पत्थर के साथ रख दिया, फिर सब लोग निर्माण करने में व्यस्त हो गए। मस्जिद क़ुबा के बारे में प्रसिद्ध है कि यही वह मस्जिद है जिसकी बुनियाद तक़्वा पर रखी गई थी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी. बयान करते हैं कि मदीना की सभी मस्जिदें जिनमें मस्जिद क़ुबा भी शामिल है उनकी बुनियाद तक़्वा पर ही रखी गई है किन्तु जिसके बारे में वह आयत नाज़िल हुई थी, वह मस्जिदे क़ुबा ही है।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुबा में दस दिन से अधिक ठहरने के बाद जुम्अ: के दिन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने के भीतरी भाग की ओर चले गए, अन्सार तथा महाजिरों की एक जमाअत आप स. के साथ थी। आप स. एक ऊँटनी पर सवार थे और हज़रत अबू बकर रज़ी. आपके पीछे थे। यह क़ाफ़ला धीरे धीरे नगर की ओर बढना शुरु हुआ। रास्ते में नमाज़ का समय हो गया और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू सालिम बिन औफ़ के मुहल्ले में ठहर कर ख़ुत्ब: दिया तथा

जुम्अ: की नमाज़ अदा की।

आप स. जिस भी मुसलमान के घर के पास से गुज़रते वे मुहब्बत के जोश से निवेदन करते कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह हमारा घर, ये हमारे जान तथा माल परस्तुत हैं, हमारे पास आप स. की सुरक्षा का प्रबन्ध भी है, आप स. कृप्या हमारे पास ठहरें। आप स. उनके लिए भलाई की दुआ करते और आगे बढ़ जाते। मुसलमान औरतें तथा बच्चियाँ ख़ुशी के जोश में अपने घरों की छतों पर चढ़ चढ़ कर स्वागत के गीत गा रही थीं। मदीने के हब्शी गुलाम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पधारने की ख़ुशी में तलवार के खेल दिखाते फिरते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ समय पश्चात हज़रत ज़ैद को मक्का भिजवाया और वह आप स. और हज़रत अबू बकर रज़ी. के परिवारों को सुरक्षित मदीना ले आए। मदीने में आप स. ने जो ज़मीन खरीदी थी वहाँ सबसे पहले मस्जिद की बुनियाद रखी तथा उसके बाद अपने और अपने साथियों के लिए मकान बनवाए।

मदीने की ओर हिजरत के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. सुन्ह नामक स्थान पर ख़ुबैब बिन असाफ़ के यहाँ ठहरे। सुन्ह मदीने के ग्रामीण क्षेत्र में एक स्थान का नाम है जो मस्जिद नबवी से लगभग दो मील की दूरी पर थी। हज़रत ख़ुबैब का सम्बंध बनू हारिस बिन खज़रज से था। एक कथन के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ी. का निवास हज़रत ख़ारजा बिन ज़ैद के यहाँ था। कुछ रिवायतों के अनुसार आप रज़ी. ने सुन्ह में ही अपना तथा कपड़ा बनाने का कारख़ाना बना लिया था, उसके द्वारा व्यवसाय किया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर अनवर ने निम्नलिखित मृतकों का सद्धर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- मुकर्रम चौधरी असगर अली कलार साहब मरहूम, असीर राहे मौला इब्ने मुकर्रम मुहम्मद शरीफ़ साहब कलार, भावलपुर। मरहूम 10 जनवरी को बन्दी बनी हुई अवस्था में बीमार होकर 70 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम पर 24 सितम्बर 2021 को धारा 295 जे, जो रिसालत के अपमान (नऊज़ुबिल्लाह) की धारा है, लगा कर मुक़द्दमा क़ायम किया गया और 26 सितम्बर को गिरफ़तार किया गया। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि रिसालत के अपमान का दोष तो अहमदियों पर तुरन्त लगा देते हैं। मरहूम अपने परिवार में अकेले अहमदी थे, माली तहरीकों में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाले, खिलाफ़त के वफ़ादार, मेहमान नवाज़, दावत इलल्लाह की रूचि रखने वाले, इबादत करने वाले तथा 1/8 भाग के मूसी थे।

2- मुकर्रम मिर्ज़ा मुमताज़ अहमद कार्यकर्ता वकालते उलिया रबवा।

3- मुकर्रम कर्नल रिटायर्ड डा. अब्दुल ख़ालिक़ साहब, पूर्व एडमिंस्ट्रेटर फ़ज़ले उमर हस्पताल रबवा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

☆ ☆ ☆

क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर

(लेखक- मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया, उत्तर भारत क़ादियान)

(भाग-2) अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

(ऐतराज़ नंबर - 3) ऐतराज़ करने वाले ने तहरीर किया है कि कई किताबें क़ुरआन-ए-मजीद की सूरत में लिखी गई थीं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन समस्त मुसहफ़ों (जिन पन्नो में क़ुरआन-ए-मजीद लिखा गया था) को जलाने का हुक्म दिया और अपना क़ुरआन-ए-मजीद जारी किया जो आज तक पढ़ा जाता है।

उत्तर: यह आरोप ग़लत और बे-बुनियाद है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना क़ुरआन-ए-मजीद जारी किया। इस की मज़ीद तफ़सील यह है कि (1) हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 11 हिज्री से 13 हिज्री (के अनुसार 632 से 634 ई. तक तक़रीबन दो वर्ष रहा (2) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 13 हिज्री से 24 हिज्री (के अनुसार 634 ई. से 645 ई. तक तक़रीबन ग्यारह बारह वर्ष रहा।

(3) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त सन् 24 हिज्री से 35 हिज्री (के अनुसार 645 ई. से 656 ई. तक़रीबन ग्यारह वर्ष रहा 4) हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना ख़िलाफ़त 35 हिज्री से 40 हिज्री के अनुसार 656 ई. से 660 ई. चार या पाँच साल रहा।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का ज़माना ख़िलाफ़त लगभग 13 वर्ष रहा। इन तेरह सालों में हज़ारों हुफ़्फ़ाज़ और लाखों मुसलमानों के हाफ़िज़ा के सीनों में क़ुरआन-ए-मजीद सुरिक्षत हो चुका था और यह वही क़ुरआन-ए-मजीद था मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ था और उनमें से अधिकतर ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हिफ़्ज़ किया था।

और यह हुफ़्फ़ाज़ समस्त इस्लामी हकूमत और ग़ैर इस्लामिया में फैल चुके थे। अब प्रश्न यह पैदा होता है क्या हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह सम्भव था कि इन हुफ़्फ़ाज़ के हाफ़िज़ और सीनों से असल क़ुरआन-ए-मजीद मिटा कर अपना जारी करदा क़ुरआन-ए-मजीद डलवा दें?

चौदह सदियां गुज़रने के बाद भी वही क़ुरआन-ए-मजीद सीना से सीना मुसलमानों में प्रचलित है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के माध्यम से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ उसको संदिग्ध बनाने की सैंकड़ों कोशिशें हुईं परन्तु सबकी सब अल्लाह तआला ने ना-काम-ओ-ना-मुराद फ़रमा दीं। इसलिए ऐतराज़ करने वाले को चौदह सदियों की तारीख़ को सम्मुख रखना चाहिए।

इसलिए जिस बुख़ारी की हदीस का ऐतराज़ करने वाले ने हवाला दिया है इस में वर्णित है कि असल क़ुरआन-ए-मजीद हज़रत हफ़सा को वापस कर दिया और असल शब्द ये हैं कि

رَدَّ عُثْمَانُ الصُّحُفَ اِلیٰ حَفْصَۃَ وَ اَرْ سَلَ اِلیٰ کُلِّ اُفُقٍ بِمُصْحَفٍ مِمَّا نَسَخُوا۔ وَ اَمَرَ بِھَا سِوَاہُ مِن الْقُرْاٰنِ فِی کُلِّ صَحِیفَۃٍاَوْ مُصْحَفٍ انْ یُّحَرَّ قَ ۔ (صحیح بخاری)

अनुवाद : असल नुस्ख़ा हज़रत हफ़सा को वापस कर दिया। फिर नक़ल शूदा नुस्ख़ों से एक एक नुस्ख़ा हर इलाक़े में भेज दिया गया और हुक्म दिया कि असल नुस्ख़ा क़ुरआन-ए-मजीद के अतिरिक्त जो किसी के पास है क़ुरआन-ए-मजीद के नाम से लिखा हुआ है उसे जला दिया जाए।

(ऐतराज़ नम्बर- 4) हज़रत उसमान ने इस क़ुरआन के नाम पर बनाए जाने वाले नुस्ख़ों को जलाने का हुक्म दिया।

उत्तर :इस्लाम की तारीख़ से ज्ञात होता है कि सहाबा नुज़ूल क़ुरआन के आरम्भ से ही ज़ाती तौर पर क़ुरआन मजीद को लिखते जाते थे और इस का सबूत यह है कि हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो नबुव्वत के पांचवें या छठे साल इस्लाम में शामिल हुए थे आपके इस्लाम स्वीकार करने से पहले 40 मर्द और 11 औरतें इस्लाम में शामिल हो गए थे। अर्थात कुल मुसलमानों की संख्या 51 लोगों पर आधारित थी।

(उद्धरित मिशकात अस्मा उर्रिजाल)

हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो अपने घर से हुज़ूर को क़तल करने के लिए निकले थे रास्ते में किसी ने उनको कहा आपकी बहन फ़ातिमा और बहनोई मुस्लमान हो गए हैं अत: हज़रत उमर अपनी बहन के घर पहुंचे तो बहन ने क़ुरआन के पन्नों को छिपा दिया। इस पर हज़रत उमर ने अपनी बहन को कहा-

وَقَالَ لِاُخْتِہٖ اَعْطِیْنِیْ ھٰذِہِ الصَّحِیْفَۃَ

(सीरत इब्न हश्शाम, बाब इस्लाम उमर बिन अल खत्ताब पृष्ठ 41)

प्रिय पाठकगण ध्यान दें क़ुरआन के नाज़िल होने पर अभी पांचवां या छठा साल था उस वक़्त तक नाज़िल हुआ क़ुरआन पन्नों की शक्ल में हज़रत उमर की बहन फ़ातिमा के पास था इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि क़ुरआन-ए-मजीद के नाम से बहुत से नुस्ख़े सहाबा किराम ने अपने पास लिखे हुए थे। हज़रत उसमान रज़ि ने अपने दौर ख़िलाफ़त में यह महसूस किया कि असल क़ुरआन वही होगा जो असल सनद के अनुसार होगा बाक़ी सब नष्ट किए जाएं।

इलाही हिफ़ाज़त का नाक़ाबिल-ए-तरदीद सबूत

(1) क़ुरआन-ए-मजीद के मुहाफ़िज़ हक़ीक़ी अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के द्वारा असल प्रमाणिक नुस्ख़ा क़ुरआन एक स्थान पर तैय्यार करवाया।

(2) अगर अल्लाह तआला ऐसा न करवाता तो क़ुरआन-ए-मजीद हदीसों की तरह हो जाता और जैसे कुछ हदीसों में मतभेद है वैसे ही क़ुरआन-ए-मजीद के बारे में सहाबा की राए विभिन्न हो सकती थीं और हर सहाबी कहता जो क़ुरआन का नुस्ख़ा, मैंने लिखा है इस में यह है और दूसरा कहता मेरे क़ुरआन के नुस्ख़ा में कुछ अन्य है क्योंकि हर सहाबी ग़लती कर सकता है। इबारत को समझ कर लिखना हर इन्सान का काम

नहीं होता इसलिए ऐसी लिखी गई क़ुरआन की आयतों में ग़लती की संभावना हो सकती थी। हज़रत उसमान रज़ि ने इन सब संभावनाओं को समाप्त करने का,और जलाने का हुक्म दिया और यह सब अल्लाह तआला के आदेश के अधीन ही हो रहा था।

(3) अगर ग़ैर मुसद्दिक़ा बनाम क़ुरआन के नुस्ख़ों को जलाया न जाता तो यह शंका थी कि मुनाफ़क़ीन या मुख़ालिफ़ीन इस्लाम यहूद तथा नसारा ख़ुद इबारतें बना कर किसी नुस्ख़ा क़ुरआन में शामिल करवा सकते थे और कह देते यह भी क़ुरआन है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-मजीद में यहूद के बारे में फ़रमाता है कि

يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ

(सूरत अलबकर- 76) अनुवाद : जब कि उनमें से एक गिरोह इलाही कलाम को सुनता है और उसे अच्छी तरह समझने के बावजूद उस में परिवर्तन करता है जबकि वे ख़ूब जानते हैं।

फिर दूसरी जगह फ़रमाता है-

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

(सूरत अलबकर ,आयत नम्बर 80) अनुवाद अत: हलाकत है उन के लिए जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की तरफ़ से है।

यहूद के एक गिरोह की आदत थी कि क़ुरआन-ए-मजीद के शब्दों को बदल कर पढ़ते थे ताकि उसका अर्थ बदल जाए। इसीलिए अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुक्म दिया कि لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَ (सूरत अलबकर आयात - 105) अनुवाद: رَاعِنَا न कहा करो बल्कि यह कहा करो कि हम पर नज़र फ़र्मा। तफ़ासीर में आता है कि यहूद رَاعِنَا को رَاعِيْنَا (हमारे चरवाहे) पढ़ा करते थे।

हज़रत उम्मुल् मोमिनीन रज़ी अल्लाह अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ यहूद आए और उन्होंने (अस्सलामु अलैकुम कहने की बजाय, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए और शब्द "सलाम" को बदलते हुए कहा "अलस्सामु अलैक" (अर्थात नऊज़-बिल्लाह बददुआ दी।

(उद्धरित सही मुस्लिम, किताब अस्सलाम, बाब अन्नहा अन इब्तिदा अहले किताब बिस्सलाम)

इन शब्दों की तहरीफ़ मुख़ालिफ़ीन इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में कर रहे थे। अगर ख़ुदा तआला का वादा, और हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि की तरफ़ से समय पर क़ुरआन की हिफ़ाज़त की कार्रवाई न की जाती तो न मालूम क़ुरआन-ए-मजीद के ख़िलाफ़ क्या-क्या करते।

तौरेत में परिवर्तन के उदाहरण

यहूद तथा इसाइयों ने तौरेत किताब मुक़द्दस पुराना और नया अहदनामा में किस तरह परिवर्तन किया उसकी केवल एक उदाहरण नीचे वर्णित है

(1) तौरेत के बारे में यह आस्था है कि यह हज़रत मूसा अलैहिस्सालम पर नाज़िल हुई। अब जो किताब मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई। इस में नीचे लिखी इबारत की वृद्धि किस ने कर दिया कि ?

" अत: ख़ुदावंद के बंदा ने ख़ुदावंद के कहे के अनुसार वहीं मूआब के देश में वफ़ात पाई और मूसा अपनी वफ़ात के समय एक सौ बीस वर्ष का था।" (इस्तिस्ना, बाब 34 आयत 7)

ऊपर वाली इबारत बता रही है कि यह मूसा अलैहिस्सलाम के बाद बढ़ाई गई इबारत है। अन्यथा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने देहान्त के बाद ख़ुद यह कैसे कह सकते थे कि उन की उमर 120 साल की थी।

मुख़ालिफ़ीन इस्लाम की कोशिशें होती हैं कि क़ुरआन-ए-मजीद को भी परिवर्तित कर दिया जाए। परन्तु अल्लाह तआला की दी हुई तौफ़ीक़ के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत उसमान रज़ि के साहस और समय पर उठाए गए क़दमों ने क़ुरआन-ए-मजीद को हर परिवर्तन से सुरक्षित रखा। अल्हम्दुलिल्लाह।

अत: अल्लाह तआला ने इतनी महान हफ़ाज़त का प्रबन्ध करवा कर यह सबूत दिया कि अल्लाह तआला हर ज़माना में क़ुरआन-ए-मजीद की शाब्दिक,आर्थिक, दीनी और रुहानी हिफ़ाज़त के लिए अपना वादा - اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ पूरा करता चला जाएगा। इंशाअल्लाह

(ऐतराज़ नंबर 5) आरोप लगाने वाले ने शंका पैदा करने के लिए एक आरोप यह किया कि हज़रत अली ने क़ुरआन-ए-मजीद को ठीक कर लिया।

उत्तर : यह अल्लाह तआला के वादा اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ के विरुद्ध है और अल्लाह तआला ने ऐसा कभी नहीं होने दिया यह हज़रत सय्यदना अली रज़ि की तरफ़ ग़लत बात सम्बद्ध की जा रही है। अगर यह ठीक करने वाली बात सही होती तो आरोप लगाने वाले नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दे।

(1) आरोप लगाने वाले के कथन के अनुसार अगर हज़रत अली रज़ि ने क़ुरआन को ठीक कर लिया था तो वे देश जहां पर शीया हुकूमत में थे या हैं वे हज़रत अली रज़ि का ठीक किया हुआ क़ुरआन की प्रति क्यों प्रकाशित नहीं करते बल्कि हम देखते हैं कि ईरान और दूसरे शीया संस्थाएं वही क़ुरआन प्रकाशित करते, पढ़ते और पढ़ाते हैं जो अहले सुन्नत वालों के पास है।

(2) सय्यदना हज़रत अली रज़ि शेरे ख़ुदा और चौथे ख़लीफ़ा ने अपने ख़िलाफ़त के ज़माना में ठीक किए हुए क़ुरआन को प्रचिलित क्यों नहीं किया और मुसलमानों को यह क्यों न कहा कि तुम्हारे हाफ़िज़े में जो क़ुरआन है वह भुला कर के यह ठीक किया हुआ क़ुरआन हिफ़्ज़ करो ऐसी कोई रिवायत हमें तारीख़ इस्लाम में नहीं मिलती। अत: यह आरोप बहुत ग़लत और झूठा है असल वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ने जिस क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ख़ुद क़बूल की है उसने उसे हर परिवर्तन से सुरक्षित रखा है और क़यामत तक उसे महफ़ूज़ रखेगा। इंशा अल्लाह तआला

(ऐतराज़ नम्बर 6) क़ुरआन-ए-मजीद के अनुवाद और तफ़सीर में मुसलमानों का मतभेद है और उन ग़लत व्याख्याओं का लाभ बुनियाद परस्त और दहशतगर्द उठा रहे हैं जो इन्सानियत के लिए ख़तरनाक है।

उत्तर: अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया है-

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ قُرْءَٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

(सूरत यूसुफ़ - 3) कि हम ने क़ुरआन-ए-मजीद को सारगर्भित और स्पष्ट अरबी भाषा में उतारा है और यही अल्लाह की वाणी है।

अब रहा सवाल यह कि इस की ग़लत व्याख्याओं से बुनियाद परस्त और उग्रवादी लाभ उठा रहे हैं तो यह ग़लती ग़लत व्याख्या करने वालों और फ़ायदा उठाने वालों को न रोकने वालों की है न कि क़ुरआन-ए-मजीद की। अगर कोई मुल्की क़ानून और दस्तूर की किसी हिस्से की ग़लत व्याख्या कर के लोगों को धोखे में डाले तो दोष धोखा में डालने वालों का है न कि क़ानून का।

आरोप लगाने वाले की तरह अगर कोई यह मांग करे कि क़ानून और विधि से इस अनुच्छेद को ख़त्म कर दिया जाए क्योंकि इस हिस्से से कुछ लोग धोखा देने की कोशिश करते हैं तो क्या उस की मांग स्वीकार योग्य होगी।?? हरगिज़ नहीं

इस को एक दूसरे उदाहरण के माध्यम से इस तरह भी समझा जा सकता है कि उदाहरण के तौर पर कोई मूर्ख और अज्ञान मुसलमानों को यह कहे कि क़ुरआन-ए-मजीद में साफ़ तौर पर लिखा है لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ (सूरत अन्निसा, आयत नम्बर 44) और दूसरी जगह लिखा है: فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ

(सूरत अल माऊन, आयत नम्बर 5)

अर्थात नमाज़ के क़रीब न जाओ और जो जाएगा उस के लिए हलाकत है। अत: मुसलमानों को नमाज़ अदा नहीं करनी चाहिए। अब अगर कोई दूसरा जाहिल उठ कर यह मांग करे कि क़ुरआन-ए-मजीद की इन दो आयतों को ख़ुदा न करे निकाल दिया जाए क्योंकि उसके द्वारा मुसलमानों को धोखा दिया जा रहा है तो क्या यह मांग ठीक होगी।

अत: इन दो उदाहरणों से समझा जा सकता है कि आरोप लगाने वाले के आरोप ग़लत और निराधार और हक़ीक़त पर आधारित नहीं हैं।

(ऐतराज़ नम्बर 7) आरोप लगाने वाले ने क़ुरआन मजीद की पाँच आयतें लिख कर यह धोखा देने की कोशिश की है कि उनमें क़ुरआन मजीद ने अच्छी बातें वर्णन की हैं। और आरोप लगाने वाले के निकट ये तो अल्लाह की वाणी है जिन 26 आयतों का च्यन आरोप लगाने वाले ने प्रस्तुत किया है इस के विचार में ये अल्लाह का कलाम नहीं है उनको बाद में बढ़ाया गया है

उत्तर : पिछले पृष्ठों में सुदृढ़ तर्कों के साथ यह प्रमाणित किया गया है कि क़ुरआन-ए-मजीद में बिसमिल्लाह की' ब ''से लेकर वन्नास की ''स' तक सब का सब अल्लाह का कलाम है जो अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम के द्वारा सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल किया। और हुज़ूर के द्वारा यह कलाम हज़ारों, लाखों मुसलमानों के हाफ़िज़ा में बहिफ़ाज़त स्थानान्तरित हुआ और आज तक होता चला आ रहा है अत: इन आयतों की व्याख्या की न कोई वजह है न दलील!

क़ुरआन-ए-मजीद में हर उस विषय का वर्णन किया गया है जिसकी इन्सानी ज़िंदगी को क़यामत

तक ज़रूरत हो सकती थी इस में अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद को मज़बूत तर्कों के द्वारा सपष्ट किया गया है कायनात की सृष्टि और इस के भेद को तर्कों के द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी तरह इन्सानी ज़िंदगी के विभिन्न पक्षों के लिए जो ज़रूरतें थीं उस के बारे में हिदायतें दी गईं हैं। मसलन मुआशरत, अज़दवाजी ज़िंदगी और उसके मामलों के बारे में ,तर्बीयत औलाद, अत: ये कि वे समस्त विषय जिसकी ज़रूरत इन्सान को थी, है,या क़यामत तक होगी

यह भी याद रहे कि क़ुरआन-ए-मजीद में इन्सान की इन हालतों और जरूरतों का भी वर्णन किया गया है जो समय के साथ साथ बदलते रहते हैं और हर हालत के बारे में मार्ग दर्शन फ़रमाया है उदाहरण के तौर पर क़ुरआन-ए-मजीद में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को यह हुक्म दिया कि नमाज़ पढ़ने से पहले पानी से वुज़ू कर लिया करें। फिर ये भी फ़र्मा दिया कि अगर तुम्हें पानी न मिले तो साफ मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो

فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا (सूरत अलमायदा, नम्बर 7)

तो ख़ुशक़ साफ मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो। अब इस वुज़ू के मसले में ही दो हालतें बयान की गई हैं उमूमी हालत में हर सेहत मंद मुस्लमान को नमाज़ अदा करने से पहले पानी से वुज़ू करना है दूसरी हालत यह बयान हुई कि अगर पानी उपलब्ध न हो तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर के नमाज़ अदा करनी है अब अगर कोई दरिया, नहर या चश्मा के किनारे पर बसने वाला इन्सान यह कहे कि मुझे तो हर वक़त पानी उपलब्ध है और मैं पानी से वुज़ू कर सकता हूँ अत: तयम्मुम वाला हुक्म मैं अपने क़ुरआन से निकाल देता हूँ क्योंकि उसकी मुझे ज़रूरत नहीं है तो हर अक़ल वाला इन्सान ऐसे ख़्याल रखने वाले को समझाएगा कि क़ुरआन-ए-मजीद का यह हुक्म केवल तुम्हारे से ही विशेष नहीं है बल्कि उसी वक़्त अफ़्रीक़ा के जंगलों और मरुभूमि में भी ऐसे मुस्लमान हैं जिनके पास पानी की एक बूँद नहीं और वह वहां अल्लाह तआला के दूसरे आदेश के अनुसार तयम्मुम कर के नमाज़ अदा करेंगे। अत: सपष्ट हुआ कि हर हालत तथा ज़माने एवं स्थान के बदलने के साथ क़ुरआन-ए-मजीद के आदेश और शिक्षाएं अलग अलग हैं।

सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों का मुबारक ज़माना दो हिस्सों में विभाजित है 1) **मक्की ज़माना:** इस तेरह वर्ष के ज़माने में अल्लाह तआला ने सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़ुल्म सहने और बर्दाश्त करने और सब्र की शिक्षा दी। 2) **मदनी दौर:** जब कुफ़्फ़ार मक्का मुसलमानों पर चढ़ाई करने के लिए मदीना तक पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने इस दौर में मुसलमानों को अपने बचाओ, हिफ़ाज़त और प्रतिरक्षा के बारे में शिक्षाएं और हिदायतें दीं।

हर दो ज़मानों के हालात और मांग अलग अलग थी। आरोप लगाने वाले ने जो 26 आयतें पेश कर के येह प्रभाव देने की कोशिश की है कि उनमें दहश्तगर्दी की शिक्षा दी गई है यह बहुत ग़लत है। क़ुरआन-ए-मजीद के अध्ययन से पता चलता है कि यह वह हालात थे जब मुस्लमान अपना बचाओ कर रहे थे। हालाँकि मुस्लमान मदनी दौर में भी किसी प्रकार का क़िताल या जंग करना नहीं चाहते थे जैसा कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में हुक्म दिया कि

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَخَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسٰى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَشَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (सूरत अलबकर, नंबर 217)

अनुवाद : तुम पर क़िताल फ़र्ज़ कर दिया गया है जबकि वह तुम्हें नापसंद था। और संभव नहीं कि तुम एक चीज़ नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो। और मुम्किन है कि एक चीज़ तुम पसंद करो लेकिन वह तुम्हारे लिए बुराई फैलाने वाली हो। और अल्लाह जानता है जबकि तुम नहीं जानते।

इसी तरह वे आयतें नाज़िल हुईं जिनके बारे में इस्लाम के विरोधी कहते हैं कि उनमें दहशतगर्दी और उग्रवाद की शिक्षा दी गई है अगर इन आयतों की क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूदगी दहशतगर्दी का कारण समझा जा सकता है तो फिर यह उसूल तो समस्त धर्मों की धार्मिक पुस्तकों पर लागू होना चाहिए धार्मिक किताबों से कुछ उदाहरण वर्णित हैं।

तौरात और इंजील में जंग की तालीम

जब ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा उसे अर्थात किसी शहर को तेरे क़ब्ज़ा में कर दे तो वहां के हर मर्द को तलवार की धार से क़तल कर मगर औरतों और लड़कियों और चौपायों को जो कुछ इस शहर में है इस का सारा लूट अपने लिए ले। (इस्तिस्ना, अध्याय 20 आयात 12,13)

"वे इन क़ौमों के शहरों में जिन्हें ख़ुदावंद तेरा ख़ुदा तेरी मीरास कर देता है किसी चीज़ को जीता न छोड़।" (इस्तिस्ना, अध्याय आयत 61)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इंजील में फ़रमान है कि यह न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलाने आया हूँ। (इंजील, मति, अध्याय 10 आयत 34)

गीता में जंग के बारे में तालीम

इसी तरह हमारे देश भारत में श्रीकृष्ण जी महाराज की उपस्थिति में कुरूक्षेत्र के मैदान में 18 दिन महाभारत की जंग लड़ी गई और जब अर्जुन अपनी कमान फेंक कर दिल हार कर बैठ गया और जंग से इन्कार कर दिया तो श्रीकृष्ण जी महाराज ने उसे जंग की तालीम दी बावजूद उस के कि उसके मुख़ालिफ़ीन में उसके सामने क़रीबी रिश्तेदार और गुरु द्रोणाचार्य भी शामिल थे। श्रीकृष्ण जी महाराज ने अर्जुन को कहा।

(गीता दूसरा अध्याय)

(अनुवाद 31) और अपने धर्म को देखकर भी तुझे भयभीत न होना चाहिए , क्योंकि क्षत्रिय के लिए धर्मयुध (धर्म की लड़ाई) से बढ़कर और कोई बेहतरी देने वाला करतब नहीं।

(अनुवाद 32) और हे पार्थ मुबारक और ख़ुशनसीब हैं वह क्षत्रिय जिन के लिए स्वर्ग का दरवाज़ा खोलने वाले ऐसे धर्म युध ख़ुद बख़ुद (बग़ैर बुलाए हुए) आते हैं।

(अनुवाद 33) और अगर तो इस धर्म युद्ध संग्राम को नहीं करता तो अपने स्वधर्म नेक फ़र्ज़ और कीर्ति (नेक-नामी) से वंचित हो कर पाप में गिरता है।

(अनुवाद 34) और सब लोग बहुत दिनों तक तेरी बदनामी का वर्णन करते रहेंगे। बाइज़्ज़त आदमी के लिए बदनामी मौत से भी बड़ी है।

(अनुवाद 35) बड़े रथों वाले जंग करने वाले कहेंगे कि तू डर कर लड़ाई से भागा है और जो लोग तेरी उत्तम तारीफ़ें करते थे वे तिरस्कार करेंगे।

(अनुवाद 36) तेरे दुश्मन तेरी शान में अनुचित शब्द प्रयोग करेंगे। तेरी ताक़त का उपहास उड़ाएंगे, इस से ज़्यादा दुखदायक और क्या हो सकता है।

(अनुवाद 37) अगर मरा तो बहिश्त (स्वर्ग) में जाएगा। अगर विजित होगा तो ज़मीन की सलतनत और ख़ुशियों में जाएगा। इस लिए हे कुंती पुत्र तू लड़ने के लिए तत्पर हो कर खड़ा हो जा।

(अनुवाद 38) सुख दुख लाभ हानि और विजय पराजय को बराबर समझ कर जंग के लिए हिम्मत की कमर बांध। तब तुझे पाप न लगेगा।

(श्रीमद् भगवत गीता परम संत पुर्ण धनी महारेशी शिवबर्त लाल जी महाराज प्रकाशन 1977 ई)

हमारे देश भारत में हिंदू दोस्त दशहरे का त्योहार बड़े जोश और आस्था से मनाते हैं और इस से पहले राम लीला और सीरियल में वे दृश्य पेश किए जाते हैं जो राम चन्द्र जी महाराज की लंका पर चढ़ाई कर के रावण और उसके साथियों को हलाक तथा बर्बाद करने वाले हैं। निवेदन करने वाली जैसी सोच रखने वाला अगर कोई इन्सान यह ऐतराज़ करे कि इन दृष्यों को देखकर तो बहुत से नौजवान रामचंद्र जी की तरह अपने दुश्मन को रावण समझते हुए तबाह-ओ-बर्बाद कर देंगे और उनके दिलों में इंतिक़ाम की भावना पैदा होगी। क्या इस कारण से दरख़ास्त देने वाला इस त्योहार के रोकने की भी दरख़ास्त देंगे।? हरगिज़ नहीं

आरोप लगाने वाले ने एक यह प्रभाव देने की कोशिश की है कि क़ुरआन-ए-मजीद में अक्सर स्थानों में सकारात्मक और इन्सानियत की सफलता के लिए शिक्षाएं दी गईं हैं और दूसरी जगह क़त्ल की शिक्षा भी दी गई है और औरप लगाने वाले कि निकट नऊज़ बिल्लाह उनको हटा देना चाहिए।

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

आरोप लगाने वाले को चाहिए कि वह यहूद तथा नसारा की पवित्र किताब अह्दनामा क़दीम और जदीद New testament and Old testament का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें इस में भी सकारात्मक शिक्षाएं हैं और उसके साथ- साथ जंग के बारे में भी हिदायतें दी गई हैं।

इसी तरह आरोप लगाने वाले को गीता का भी अध्ययन करना चाहिए एक तरफ़ इस में बहुत क़ीमती नसीहतें कृष्ण जी महाराज ने की हैं और दूसरी तरफ़ जंग के लिए भी उकसाया है और इसका विस्तार वर्णन किया जा चुका है।

अत: इन उदाहरणों से आरोप लगाने वाले को समझ लेना चाहिए कि क़ुरआन मजीद ने अमन की हालत के बारे में भी शिक्षाएं दी हैं और इसी तरह अगर उन पर जंग के हालात ला दिए जाएं तो उन हालात के बारे में भी राहनुमाई की है।

अगर जंग के बारे में हिदायतें न दी जातीं तो यह ऐतराज़ हो सकता था कि यह किताब सम्पूर्ण नहीं है। क्योंकि इस में दुश्मन से मुक़ाबले के लिए शिक्षाएं नहीं हैं। यहां तक कि इस में यह शिक्षा भी दी गई है कि अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो क्या करना है। इस सिलसिले में कुर्आन फ़रमाता है:

وَإِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْۢ بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ

(सूरत अलहुजुरात, नंबर 10)

अनुवाद : और अगर मोमिनों में से दो जमातें आपस में लड़ पढ़ें तो उनके बीच सुलह करवाओ। अत: अगर उनमें से एक दूसरी के ख़िलाफ़ सरकशी करे तो जो ज़्यादती कर रहा है उस से लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के फ़ैसला की तरफ़ लौट आए। अगर वह लौट आए तो इन दोनों के बीच न्याय से सुलह करवाओ और इन्साफ़ करो। अवश्य अल्लाह इन्साफ़ करने वालों से मुहब्बत करता है।

ऊपर वर्णन की गई आयत में नीचे लिखी बातें वर्णन की गई हैं (1) अगर मोमिनों के दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उन दोनों में सुलह करा दो (2) अगर सुलह हो जाने के बाद उन में से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिलकर उसी पर चढ़ाई करने वाले के ख़िलाफ़ जंग करो (3) फिर अगर वह दोबारा सुलह पर रज़ामंद हो जाएगी तो इन्साफ़ को समक्ष रखो।

अत: सारी बात का सार यह कि क़ुरआन-ए-मजीद की समस्त शिक्षाएं सम्पूर्ण और मुकम्मल हैं इस पर किसी प्रकार का ऐतराज़ और सवाल नहीं हो सकता।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत द्वारा क़ुरआन की सेवा

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की ज़ाहिरी और माअनवी हिफ़ाज़त और सुरक्षा के लिए सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त राशिदा का मुबारक निज़ाम जारी फ़रमाया और जब यह निज़ाम बाक़ी न रहा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक

भविष्यवाणी के अनुसार मुजद्दिद के आगमन का सिलसिला शुरू हुआ।
हदीस शरीफ़ में आया है :

عَن اَبِی ھُرَیرۃ رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللہَ یَبۡعَثُ لِھٰذِہِ الۡاُمَّۃِ عَلٰی رَاۡسِ کُلِّ مِائَۃِ سَنَۃٍ مَنۡ یُّجَدِّدُلَھَا دِیۡنَھَا (अबू दाऊद, भाग 2 पृष्ठ 212 किताबुल मलाहिम)

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस उम्मत के लिए हर सदी के सिर पर एक मुजद्दिद मबऊस फ़रमाया करेगा जो आकर धर्म का नवीनीकरण करेगा।

क़ुरआन मजीद की ज़ाहिरी और मानवी हिफ़ाज़त के लिए हर हिज्री सदी के आरम्भ में अल्लाह तआला किसी मुजद्दिद को भेजता रहा जो कि क़ुरआन मजीद की सही शिक्षाओं को दुनिया के सामने पेश करता। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी हाविष्यवाणी फ़रमाई थी कि चौधवीं सदी हिज्री के आरम्भ में अल्लाह तआला एक ऐसे मुजद्दिद को भेजेगा जो इस उम्मत का मसीह मौऊद होगा और वह सूरत अलुजम्अ की भविष्यवाणी के अनुसार सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी बिअसत का द्योतक होगा। जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के अक़ीदे के अनुसार वह मौऊद व्यक्ति हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम हैं आपने अल्लाह तआला के हुक्म से चौदहवीं सदी हिज्री के छठे साल 20 रजब 1306 हिजरी 23 मार्च 1889 ई को जमाअत अहमदिया मुस्लिम जमाअत की स्थापना की और पहले दिन 40 लोग बैअत कर के इस मुबारक जमाअत में शामिल हुए थे बाद में दिन प्रितिदिन इस संख्या में इज़ाफ़ा होता चला गया। अलहमदु लिल्लाह इस समय 212 मुल्कों में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की स्थापना हो चुकी है और दिन प्रतिदिन यह हर दृष्टकिोण से तरक़्क़ी कर रही है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने इलाही तफ़हीम के अनुसार यह ऐलान भी फ़रमाया कि

"अल्लाह तआला ने अपने वाादा के अनुसार कि

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (हिजर 15/10)

क़ुरआन शरीफ़ की अज़मत को क़ायम करने के लिए चौदहवीं सदी के सिर पर मुझे भेजा।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 433)

"क़ुरआन-ए-करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है इस आरम्भिक ज़माना में इन्सान के अंदर छिपी हुई और फ़रामोश हुई सच्चाइयों और अच्छाइयों को याद दिलाने के लिए आया था। अल्लाह तआला के इस सच्चे वाादा की दृष्टि से

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(हिजर 15/10) इस ज़माने में भी आसमान से एक मुअल्लिम आया जो

وَاٰخَرِیۡنَ مِنۡھُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِھِمۡ

(सूरत अल्जुम्अ 62/4) का मिस्दाक़ और मौऊद है। वह वही जो तुम्हारे बीच बोल रहा है।"
(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 60)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का जन्म 14 शवाल 1250 हिज्री 13 फरवरी 1835 ई को हुई। आपकी वफ़ात 24 रबी उल अव्वल 1326 हिजरी 26 मई 1908 ई को हुई। वफ़ात के समय क़मरी लिहाज़ से आपकी उमर लगभग 76 साल थी जिस तरह सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम शुरू हुआ और हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत उमर रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत उसमान रज़ी अल्लाह अन्हो हज़रत अली रज़ी अल्लाह अन्हो ख़ुलफ़ाए राशिदीन थे इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे प्रादर्भव के मज़हर हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद चौदहवीं सदी हिज्री के 26 वीं साल 25 रबी उलअव्वल1327 हिजरी 27 मई 1908 को एक बार फिर अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त राशिदा का क़ियाम फ़रमाया।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद की सूरत नम्बर 56 में फ़रमाया है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उन से अल्लाह ने मज़बूत वादा किया है उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा इसी तरह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेशगोई फ़रमाई थी कि हज़रत इमाम महदी जो कि उम्मती नबी होंगे उनके बाद ثُمَّ تَكُونُ خِلَافَةٌ عَلَى مِنْهَاجِ النُّبُوَّة नबुव्वत के तरीक़ा पर ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी होगा। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार जिन खलिफ़ा किराम को ख़िलाफ़त पर आसीन फ़रमाया उनके नाम क्रम से नीचे वर्णित हैं-

(1) हज़रत हाजी उल-हरमैन मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो 27 मई 1908 से 13 मार्च1914 ई वफ़ात)

(2) हज़रत हाजी उल-हरमैन मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो 14 मार्च 1914 ई 8 नवम्बर 1965 ई वफ़ात)

(3) हज़रत हाफ़िज़ मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहिमहुल्लाह तआला मौरख़ा 8 नवम्बर 1965 ई से 8 जून 1982 ई वफ़ात)

(4) हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहिमहुल्लाह तआला 10 जून 1982 ई से 19 अप्रैल 2003 ई वफ़ात)

(5) हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब नसरहुल्लाह तआला 22 अप्रैल 2003 ई

दुआ है अल्लाह तआला हमेशा आपको सेहत तथा सलामती वाली लम्बी उमर प्रदान फ़रमाए। आमीन
(शेष...)

☆ ☆ ☆

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की

काव्य रचना

सराए ख़ाम

दुनिया की हिरसो **आज़**[1] में क्या कुछ न करते हैं
नुक़्साँ जो एक पैसा को देखें तो मरते हैं

ज़र[2] से प्यार करते हैं और दिल लगाते हैं
होते हैं ज़र के ऐसे कि बस मर ही जाते हैं

जब अपने दिलबरों को न जल्दी से पाते हैं
क्या क्या न उनके हिजर में आँसू बहाते हैं

पर उन को उस सजन की तरफ़ कुछ नज़र नहीं
आँखें नहीं हैं कान नहीं दिल में डर नहीं

उन के **तरीक़ो**[3] धर्म में गो लाख हो फ़साद
कैसी ही हो **इयाँ**[4] कि वो है झूठ **एतकाद**[5]

पर तब भी मानते हैं उसी को **बहर**[6] सबब
क्या हाल कर दिया है **तअस्सुब**[7] ने, है ग़ज़ब

दिल में मगर यही है कि मरना नहीं कभी
तर्क[8] इस **इयाल**[9] को औम को करना नहीं कभी

ऐ ग़ाफिलाँ वफ़ा न कुन्द ई सराए ख़ाम
दुनियाए दूँ नमानद् व नमानद् ब कस **मुदाम**[10]★

(सुरमा चश्मा आर्य पृ. 89, रूहानी ख़ज़ायन भाग 2 पृ.137)

सराए ख़ाम- कच्चा, निराधार, सड़ा हुआ घर 1. लोभ लालसा। 2. धन। 3. मार्ग। 4. प्रकट। 5. विश्वास। 6. बिना कारण। 7. ईर्ष्या। 8. छोड़ना 9. ख़ानदान। 10. हमेशा।

★ ऐ अज्ञानियो ! ये नश्वर संसार किसी का साथ नहीं देता
ये संसार किसी के साथ सदैव न रहा है न रहेगा।

कुछ नादानों द्वारा किए गए ऐतराज़ों के उत्तर

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में

अनुवादक- फ़रहत अहमद आचार्य

और उनके ऐतराज़ों में से एक यह है कि वे कहते हैं क़ुरआन से सिद्ध है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम क़त्ल या सूली (सलीब) पर लटकाए बिना आसमान की ओर उठाए जा चुके हैं और हदीसों में वर्णित है कि वह शीघ्र नाज़िल होगा।★ और वह दज्जाल का वध करेगा और विवाह करेगा और उसकी संतान होगी। फिर वह मृत्यु को प्राप्त होगा और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किया जाएगा। और कुछ हदीसों में आया है कि वह मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ और जिस ज़माने में अल्लाह महदी को अवतरित करेगा उसी ज़माने में ईसा के मौत से पूर्व आगमन पर सर्वसम्मति हो चुकी है। और वह याजूज और माजूज के विरुद्ध बद्दुआ करेगा तो वह उनकी बद्दुआ से मर जाएंगे। तो फिर उन हदीसों का कैसे इन्कार किया जा सकता है जिन पर पहले और गुज़रे हुए नेक लोगों और सहाबा और ताबईन, इमाम और बड़े-बड़े मुहद्दसीन ने सर्वसम्मति व्यक्त की है?

इसका उत्तर यह है कि तू जान ले कि ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु अटल आयतों से साबित है। क्योंकि पवित्र क़ुरआन ने 'तवफ़्फ़ी' शब्द को केवल मौत देने और मारने के लिए ही प्रयोग किया है और उसके इन अर्थों का अल्लाह के रसूल ने भी सत्यापन किया है और इस पर सहाबा में से एक ऐसे व्यक्ति ने गवाही भी दी है जो अपनी क़ौम के शब्दकोश को सबसे अधिक जानने वाला था, जिसने व्याख्या के विज्ञान को प्रतिपादित किया और उसे तैयार किया और जिसे अरबी भाषा की तहक़ीक़ में पूर्ण महारथ थी और वह अध्यात्म ज्ञानियों में से था। और उसकी गवाही जैसा कि बुख़ारी में वर्णित है और बुख़ारी के व्याख्याकार 'अलऐनी' ने इब्न अबी हातिम से पूरी सनद के साथ इस रिवायत को हज़रत इब्ने अब्बास तक पहुंचाया है क्योंकि उन्होंने कहा है कि 'मुतवफ़्फ़ीक' का अर्थ है मुमीतुका (अर्थात मैं तुझे मृत्यु दूंगा)। फिर तू यह जान ले कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पार्थिव शरीर समेत जीवित उठाए जाने की आस्था के बारे में सर्वसम्मति का दावा ग़लत और बिलकुल झूठा है। इब्नुल असीर ने अपनी पुस्तक "अलकामिल" में कहा है कि जानकारों ने ईसा अलैहिस्सलाम के रफ़ा (उठाए जाने) के बारे में मतभेद किया है कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ या बाद में। अत: उनमें से कुछ इस मत की ओर गए हैं कि उनका रफ़ा मौत से पहले हुआ और कुछ का यह मत है कि वह 3 घंटे या 7 घंटे तक मृत रहे और

★**हाशिया :-** यदि ईसा अलैहिस्सलाम उठाए जाने के बाद संसार की ओर पुन: आने वाले होते तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूं कहते कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह लौट आए। परन्तु आपने तो यह फ़रमाया है कि ख़ुदा की क़सम निकट है कि वह नाज़िल हो। अत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का 'लौटने' के शब्द को त्यागना और 'नुज़ूल' के शब्द को अपनाना इस बात का ठोस तर्क है कि इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभिप्राय कोई और व्यक्ति है न कि वह ईसा इब्न मरियम जो अल्लाह के नबी हैं। इसी से।

मौतज़िला और जहमिय्या में से एक पक्ष इस मत की ओर गया है कि आप का रफ़ा पार्थिव शरीर के साथ नहीं हुआ बल्कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गए और उनका रफ़ा, रूहानी रफ़ा हुआ (अर्थात् उनको आध्यात्मिक रूप से उठाया गया न कि शरीर सहित) और उनका नुज़ूल (अर्थात आना) भी आध्यात्मिक होगा जैसा कि उनका आध्यात्मिक रफ़ा हुआ था। और (इमाम) बुख़ारी ने उनकी मृत्यु को अपनी 'सहीह (बुख़ारी)' में अल्लाह की किताब तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों और कुछ सहाबियों के कथन से सिद्ध किया है। (फिर बताओ कि) उनके जीवित उठाए जाने और उनके न मरने पर सर्वसम्मति कहां सिद्ध हुई और इसी प्रकार मुसलमान उनको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र में दफन किए जाने पर भी सहमत नहीं। और 'ऐनी' ने बुख़ारी की व्याख्या में कहा है कि- कहा गया है कि वह अरज़े मुक़द्दसः (पवित्र भूमि) में दफन होंगे और उसी प्रकार उनके नुज़ूल (उतरने) के स्थान के बारे में भी मतभेद है। और इब्ने अब्बास की हदीस में है वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल को फ़रमाते हुए सुना कि मेरा भाई ईसा इब्ने मरियम इमाम, मार्गदर्शक, निर्णायक और न्यायकर्ता होने की अवस्था में अफीक नामक पहाड़ पर उतरेगा। उसके हाथ में दज्जाल को क़त्ल करने के लिए एक भाला होगा और युद्ध स्थगित हो जाएगा। नईम बिन हमाद ने **जुबेर बिन नफीर** और शुरेह और उमर बिन अस्वद और कसीर बिन मुर्रह के तरीके पर रिवायत की है कि लोग कहते हैं कि दज्जाल ही शैतान है, उसके अतिरिक्त और कोई नहीं अर्थात वह दज्जाल अंतिम युग में निकलेगा और लोगों के दिलों में भ्रम पैदा करेगा और मसीह उसे आसमानी हथियार अर्थात नूर के द्वारा क़त्ल करेगा और सहाबा रिज़वानुल्ला अलैहिम में से जो उनके नुज़ूल पर ईमान लाए थे वह केवल लाक्षणिक तौर पर ईमान लाए थे। और जिन्होंने इस विषय में सहाबा के बाद अधिक विस्तारपूर्वक बात की है तो उन्होंने ठोकर खाई है और हम पर अनिवार्य नहीं कि हम उनके मतों का अनुसरण करें। वे भी मर्द थे और हम भी मर्द हैं और अल्लाह ने हम पर उपकार किया है और अपने इल्हामों के द्वारा हमें वह कुछ समझा दिया है जो

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

महिलाएं और इस्लाम

"और उन स्त्रियों का विधि के अनुसार उतना ही अधिकार है जितना पुरुषों का"

(पवित्र क़ुर्आन- 2:229)

''जो भी पुण्यकर्म करेगा चाहे वह स्त्री हो अथवा पुरुष बशर्ते कि वह ईमानदार (मोमिन) हो तो निस्सन्देह हम उसे पवित्र जीवन प्रदान करेंगे और उनका प्रतिफ़ल उनके उन अति उत्तम कर्मों के अनुसार उन्हें देंगे जो वे करते रहे।''

(पवित्र क़ुर्आन- 16:98)

उन्हें नहीं समझाया गया और यह अल्लाह की कृपा है और वह अपने मोमिन बंदों में से जिसे चाहता है प्रदान करता है।

और अल्लाह तआला ने क़ुरआन में संकेत किया है कि तौरात इमाम है। अर्थात उसमें हर उस घटना का उदाहरण मौजूद है जो इस उम्मत के साथ घटित होगी और यही कारण है कि उस ने फ़रमाया है-

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अंबिया- 21/8)

(अनुवाद- अत: वर्णन करने वालों से पूछ लो यदि तुम नहीं जानते।) परन्तु हम तौरात में शारीरिक नुज़ूल का उदाहरण नहीं पाते बल्कि उसमें हम रूहानी नुज़ूल का उदाहरण पाते हैं। जैसा कि हमने एलिया नबी के नुज़ूल का किस्सा वर्णन किया है। अत: तू सच्चे ईमानदार दिल के साथ विचार कर। फिर इसके साथ यह भी सिद्ध हो गया कि भविष्य की घटनाएं जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या दूसरे नबियों ने दी है वे सब की सब बिल्कुल उस ज़ाहिरी रूप में घटित नहीं हुईं जैसा कि उम्मीद की जाती थी। बल्कि उनमें से कुछ ज़ाहिरी रूप में और कुछ रूपक के तौर पर घटित हुए। अत: जब अल्लाह की सुन्नत भविष्य की ख़बरों के प्रकटन के बारे में यह है तो फिर इस बात पर कौन सी दलील है कि नुज़ूल-ए-मसीह की ख़बर ज़ाहिरी रूप से घटित होने पर आधारित हो और उसका आंतरिक रूप पर आधारित होना कैसे वैध न हो? बल्कि जब हम सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं तो बुद्धि यही गवाही देती है कि वह ख़बरें जो क़यामत के लिए बड़ी-बड़ी निशानियां हैं उनके लिए आवश्यक है कि वह रूपकों के पैराये में घटित हों। क़यामत तो अचानक ही आएगी और सन्देह करने वालों का सन्देह कभी दूर न होगा यहां तक कि वह उनके पास आ जाए जैसा कि क़ुरआनी प्रमाणों से सिद्ध है। और यदि हम बड़ी-बड़ी निशानियों के प्रकटन को उनके ज़ाहिरी रूप में उचित क़रार दें तो इन्कार करने वालों की दृष्टि में क़यामत अनुमानित नहीं रहेगी। अत: अनिवार्य है कि हम यह आस्था रखें कि बड़ी-बड़ी निशानियां अपनी ज़ाहिरी सूरत में घटित नहीं होंगी और इसी प्रकार मसीह का नुज़ूल भी रूहानी नुज़ूल है जो एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से होगा जो मसीह की विशेषताओं से समानता रखता हो जैसा कि एलिया नबी के नुज़ूल के भावार्थ की व्याख्या नबियों की पुस्तकों में पहले की गई है।

और रहा उनका यह कथन कि हदीसें गवाही देती हैं कि ईसा दज्जाल का अपने हथियार से वध करेगा परन्तु हम स्वीकार नहीं करते कि हदीसें इस पर सर्वसम्मति से दलालत करती हैं बल्कि वह हदीस जो बुख़ारी में ईसा के बारे में वर्णन हुई है अर्थात अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन कि वह लड़ाई को स्थगित करेगा, स्पष्ट रूप से दलालत करती है कि ईसा दज्जाल का जंगी हथियारों में से किसी हथियार से वध नहीं करेगा और वह अपने हाथ में अपना हथियार कैसे पकड़ सकता है जबकि अल्लाह के रसूल ने उसके बारे में यह फ़रमाया है कि वह लड़ाई को स्थगित कर देगा। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि दज्जाल का वध करने का हथियार आसमान से उतारा जाने वाला आध्यात्मिक हथियार होगा जैसा कि इब्न अब्बास से मरवी हदीस इस पर अदालत करती है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा भाई ईसा इब्न मरियम अफीक नामक पहाड़

पर बतौरे महदी, पथप्रदर्शक और बतौर निर्णायक अवतरित होगा। उसके हाथ में एक हथियार होगा जिससे वह दज्जाल का वध करेगा। इससे यह स्पष्ट हुआ कि यह हथियार आसमानी है न पार्थिव। तो वध भी अध्यात्मिक विषय है न कि शारीरिक। फिर जब दज्जाल अंतिम युग का शैतान है जो अपने द्योतकों पर गुमराही का साया फैलाएगा तो शारीरिक वध के क्या अर्थ? और उन्होंने वर्णन नहीं किया कि दज्जाल को उसके वध के बाद दफन किया जाएगा या जला दिया जाएगा या समुद्र में डाल दिया जाएगा या धरती पर फेंक दिया जाएगा ताकि पक्षी उसे खा जाएं। अत: यह समस्त अकाट्य तर्क हैं कि दज्जाल का वध एक अध्यात्मिक विषय है। और जान ले कि ईसा का वह हथियार जो उसके साथ आसमान से उतरेगा वह उसके सांस (अर्थात वाक् शक्ति) का हथियार है जिससे हर काफ़िर नष्ट हो जाएगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम बुद्धिमानों के समान विचार नहीं करते और तुम जान चुके हो कि दज्जाल शैतान है जैसा कि कुछ हदीसों में आया है। अत: इब्लीस के वध का हथियार सिवाए आध्यात्मिक हथियार के और कुछ नहीं। अत: जंग के स्थगन की हदीस सही है जो बुख़ारी में पाई जाती है और हर वह हदीस जो बुख़ारी की विरोधी है या तो उसमें किसी रावी ने मिलावट की है या वह भावार्थ करने योग्य है। और जो इस बारे में बहस करता है वह इस हदीस को भूल गया है जो इस किताब में पाई जाती है जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे सही किताब है। और यही सच्चाई है और उसका इन्कार कोई मूर्ख लापरवाह व्यक्ति ही कर सकता है। अत: सोच विचार कर और जल्दबाज़ों में से न हो।

और जहां तक महदी के आगमन से जुड़ी हदीसों का संबंध है तो तू जानता है कि वह सब की सब कमज़ोर, मजरूह हैं और एक दूसरे की विरोधी हैं यहां तक कि इब्ने माजा और उसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तकों में एक हदीस आई है कि **لا مهدی الا عیسی ابن مریم** अर्थात ईसा बिन मरियम ही महदी होगा। तो किस प्रकार इन जैसी हदीसों पर भरोसा किया जा सकता है जिनमें अधिकता से परस्पर मतभेद, विरोधाभास और कमज़ोरी पाई जाती है और उनके रावियों में बहुत जिरह हुई है जैसा कि मुहद्दसीन को ज्ञात है।

सारांश यह कि यह समस्त हदीसें मतभेद और विरोधाभास से खाली नहीं तू इन सब से अलग रह और हदीसों के झगड़ों को क़ुरआन की ओर लौटा और क़ुरआन को उन पर निर्णायक बना ताकि तुझ पर हिदायत प्रकट हो और तू उन लोगों में से हो जाए जो सन्मार्ग प्राप्त हैं परन्तु यदि तू हदीसों को उनके विरोधाभास, अत्यधिक मतभेद और उनके विश्वास के स्तर से गिरे हुए होने के बावजूद स्वीकार करता है तो तेरे लिए यह कहीं अधिक उचित होगा कि तू क़ुरआन को स्वीकार करें जो ऐसा अकाट्य और विश्वसनीय है कि झूठ न तो उसके सामने से आ सकता है और ना उसके पीछे से, अगर तू विश्वास के मार्ग का अनुसरण करना चाहता है। **(.....शेष)**

{हमामतुल बुश्रा (हिन्दी) पृष्ठ- 197-203}

☆ ☆ ☆

सामान्य ज्ञान (गूगल के सौजन्य से)

प्रश्न: 2021 में बॉक्सिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया का अध्यक्ष किसे चुना गया?

उत्तर: अजय सिंह

प्रश्न: PayPal ने भारत में जरूरी सेवाओं का भुगतान कब बंद किया?

उत्तर: 1 अप्रैल 2021

प्रश्न: 2021-22 में ई-नाम (e-name) पोर्टल के माध्यम से देश में कितने मंडियों को जोड़ा गया है?

उत्तर: 1000 मंडियों को जोड़ा गया है।

प्रश्न: भारत का पहला थंडरस्टॉर्म रिसर्च टेस्टबेड कौन से राज्य में बनाया जाएगा?

उत्तर: उड़ीसा

प्रश्न: ILO ने अपनी रिपोर्ट किस पर जारी की?

उत्तर: अंतरराष्ट्रीय प्रवासी श्रमिक

प्रश्न: विश्व बैंक ने कोविड के टीके के लिए कितना रुपए खर्च किया हैं?

उत्तर: $ 8 बिलियन डालर

प्रश्न: साइबर सुरक्षा सूचकांक (Cybersecurity Index) ने भारत में कौन सा स्थान हासिल किया है?

उत्तर: 10वां स्थान

प्रश्न: 2020-21 में भारत ने किस चीज़ के आयात कर में कटौती की है ?

उत्तर: कच्चे पाम तेल

प्रश्न: अंतरिक्ष स्टेशन पर चीन कितने अंतरिक्ष यात्रियों को भेजेगा?

उत्तर: तीन

प्रश्न: NPS से बाहर निकलने के लिए किस ने ऑनलाइन विकल्प शुरू किया?

उत्तर: PFRDA

प्रश्न: पीएम मोदी कितने स्थानों पर लाइट हाउस प्रोजेक्ट्स की आधारशिला रखेंगे?

उत्तर: 6

प्रश्न: फास्टैग (FASTag) की डेडलाइन कब तक बढ़ाई गई है?

उत्तर: 15 फरवरी 2021

प्रश्न: आयकर रिटर्न फाइल करने की तारीख को कितना आगे बढ़ाया गया है?

उत्तर: 10 जनवरी 2021

प्रश्न: राज्य-संचालित मदरसों को बंद करवाने के लिए किसने विधेयक पारित किया?

उत्तर: असम विधानसभा

प्रश्न: हिमसागर एक्सप्रेस किन दो शहरों के बीच चलती है?

उत्तर: जम्मू और कश्मीर।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ (النحل: 11)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لیے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal.com flipkart.com
amazon.com paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

JANATA
STONECRUSHINGINDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

हम वायरस को फैलने से कैसे रोक सकते हैं?

अगर आप छींक रहे हैं या फिर खांस रहे हैं तो अपने मुंह के सामने टिश्यू या रुमाल ज़रूर रखें और अगर आपके पास उस वक़्त टिश्यू न हो तो अपने हाथ को आगे कर कोहनी की ओट में छीकें या खांसें।

अगर आपने कोई टिश्यू इस्तेमाल किया है तो उसे जितनी जल्दी हो सके डिस्पोज़ कर दें। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो इसमें मौजूद वायरस दूसरों को भी संक्रमित कर सकते हैं। इन सबके साथ ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कहा कि यह बेहद ज़रूरी है कि लोग हैंडशेक करने से परहेज़ करें।

कोरोना वायरस संक्रमण का प्रमुख लक्षण बुखार और सूखी खांसी आना है। अगर आपको ये दोनों लक्षण नज़र आ रहे हैं तो बेशक आपको सावधान होने की ज़रूरत है।

इसके अलावा गले में ख़राश, सिर दर्द, डायरिया जैसे लक्षण भी कुछ मामलों में पाए गए हैं। अगर आपको ख़ुद में ऐसे लक्षण नज़र आ रहे हैं तो घर में रहें। अगर लक्षण बेहद कम भी हैं तो भी पूरी तरह ठीक होने तक घर पर ही बने रहें।